Himalayan Journal of Social Sciences & Humanities
(A Peer Reviewed Journal of Society for Himalayan Action Research and Development)
ISSN: 0975-9891

प्रेमचंद के मुस्लिम परिवेश संबंधित उपन्यास ''सेवासदन'' का अनुशीलन

प्रियंका घिल्डियाल
हिन्दी विभाग हे0न0ब0ग0 केन्द्रीय विश्वविद्यालय पौड़ी परिसर

Manuscript Info

Manuscript History

Received: 25.08.2016
Revised: 14.09.2016
Accepted: 28.10.2016

कुंजी शब्द–

असरारे मआविद,हमरवुर्मा व हमसवाब, जल्वाए इसरार, कहकशां,गिन्नी,नजात,तसकीन,,बीड, खिदमत,काफिर,सेक्यूलयर जहनियत

सारांश–

प्रेमचंद की यथार्थवादी मानवीय दृष्टि का अनेक पहलुओं से उद्घाटन किया गया है। इसमें लेखक की धर्मविषयक मान्यताओं का स्पष्टीकरण भी मिलता है। सांप्रदायिकता का विरोध करना और सौहर्द स्थापित करना प्रेमचंद का मुख्य ध्येय था और इसके लिए उन्होंने साहित्य को माध्यम बनाया। उपरोक्त लेख में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि धर्म नाम पर शास्त्रों की झूठी आड़ लेकर किस प्रकार पण्डित पुरोहित जनता के सबसे बड़ें शोषक बन बैठे है। मुस्लिम परिवेश संबधित उपन्यास का चयन कर उसमें चिन्तित मुस्लिम समाज का राजनैतिक,आर्थिक,सामजिक,पारिवारिक एवं नैतिक अवस्था पर प्रकाश डाला गया है।

उपन्यास आज के साहित्य की सबसे अधिक प्रिय और सशक्त विधा है। क्योंकि उपन्यास में मनोरंजन का तत्व तो अधिक रहता ही है, साथ ही साथ जीवन को उसकी बहुमुखी छवि के साथ व्यक्त करने की शक्ति भी होती है। उपन्यास मानव–जीवन का विस्तृत विवेचन माना जाता है। हिंदी साहित्य के उपन्यास का वास्तविक स्वरूप पहले पहल प्रेमचंद के उपन्यासों में ही दिखाई पड़ता है। इन्होंने उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा दी। दिशा ही नहीं दी उसे उत्कर्ष पर पहुँचा दिया। उपन्यास के क्षेत्र में मानों एक युग स्थापित किया और इस युग के कथा–साहित्य को काफी प्रभावित भी किया।

''प्रेमचंद के आगमन से हिंदी उपन्यास में नया युग प्रारंभ होता हैं, बल्कि यों कहा जाए कि वास्तविक अर्थों में उपन्यास युग आरम्भ होता हैं।''[1] प्रेमचंद ने पहली बार उपन्यास के मौलिक क्षेत्र, स्वरूप और उद्देश्य को पहचाना। पहचाना ही नहीं उसे भव्य समृद्धि प्रदान की, काफी ऊँचाई तक ले गए। अक्सर कहा जाता हैं, कि प्रेमचंद ने पहली बार इस सत्य को पहचाना कि उपन्यास सोद्देश्य होने चाहिए अर्थात् उपन्यास या कोई भी साहित्यिक विधा मनोरंजन के लिए नहीं होती, वरन् वह मानव–जीवन को शक्ति और सुन्दरता प्रदान करने वाली सोद्देश्य रचना होती हैं। प्रेमचंद का उपन्यास लेखन काल वैसे तो उर्दू में सन् 1905 से ही शुरु होता है। किंतु हिंदी में सन् 1918 में 'सेवासदन' के प्रकाशन–काल से प्रारंभ होता हैं, और अंत होता हैं, 1936 में उनकी मौत के साथ। यह युग राष्ट्रीय और सामाजिक उथल–पुथल का युग था। उनका सबसे पहला उपन्यास 'असरारे मआबिद' उर्फ 'देवस्थान–रहस्य'

© SHARAD

है। इसके उपरांत उन्होंने 'हमखुर्मा व हमसवाब' उर्फ 'प्रेमा', 'किशना', 'रूठी रानी', 'जल्वाए इसरार' उर्फ 'वरदान', 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'प्रतिज्ञा', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' और 'मंगल–सूत्र' उपन्यास लिखें। मंगल–सूत्र अपूर्ण है।

'सेवासदन' उपन्यास के लेखन–काल तक देश की स्थिति में भी परिवर्तन हुआ था। सन् 1916 में कांग्रेस और लीग में एकता स्थापित करने के लिए लखनऊ में एक अधिवेशन हुआ था, जिसमें कांग्रेस और लीग के बीच समझौता हुआ था। 'सेवासदन' में प्रेमचंद जी की धर्म–निरपेक्षता की भावना पर लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस–लीग समझौते की सफलता का भी पूरा प्रभाव है। इसके अतिरिक्त इस उपन्यास के लेखन–काल तक प्रेमचंद जी का कई ऐसे मुसलमानों से संपर्क हो चुका था, जो उदार राष्ट्रीय विचारों के लोग थे। मौलाना मुहम्मद अली और लाहौर की 'कहकशां' पत्रिका के संपादक इम्त्याज अली 'ताज' प्रेमचंद के अच्छे मित्र थे। ''मौलाना मुहम्मद अली प्रेमचंद जी को उनकी हर एक कहानी के लिए एक गिन्नी मखमल की डिब्बी भेंट किया करते थे।''[2] ''अध्यापक होने के नाते भी प्रेमचंद जी कई सुलझे हुए उदार दृष्टिकोण वाले मुसलमान अध्यापकों और छात्रों के संपर्क में आ चुके थे, जो प्रेमचंद के बहुत प्रशंसक थे।''[3] इन सब वास्तविक पात्रों का बिम्ब प्रेमचंद जी के 'सेवासदन' उपन्यास के मुसलमान पात्रों में भी दिखाई देता है।

'सेवासदन' मूलतः वैश्याओं की समस्या को लेकर लिखा गया उपन्यास है। इसमें लेखक ने दिखाया हैं, कि वैश्याओं को शहर से बाहर निकालने के प्रश्न को, हिन्दू और मुसलमान नेता धार्मिक और राजनीतिक रंग देने का प्रयत्न करते हैं। मुंशी पद्मसिंह शर्मा जब वैश्याओं से संबंधित प्रस्ताव को कमेटी में रखते हैं, तो उस समय कुछ हिन्दू और मुसलमान नेता इस सामाजिक प्रश्न को भी हिंदू या मुसलमान की भाषा में सोचते हैं, मानवीय दृष्टि से नहीं। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया हैं, कि हिन्दुओं और मुसलमानों में बहुमत उन लोगों का हैं जो या तो हिन्दू हैं या मुसलमान, इन्सान नहीं है। इस उपन्यास में इन्होंने मुसलमानों के नेता हाशिम भाई को कट्टर, मुसलमान और हिन्दुओं के नेता सेठ बलभद्रदास को पक्का हिन्दू दिखलाया हैं। ''मुसलमानों के नेता हाशिम भाई तो इतने कट्टर मुसलमान हैं कि वे स्पष्ट कहते हैं, कि यदि हिन्दुओं पर विश्वास करने से उन्हें 'नजात' (मुक्ति) भी मिले तो वे उसके भी इच्छुक नहीं हैं।''[4] मुसलमान लोग सोचते हैं कि हिन्दुओं का वेश्याओं को शहर से हटाने का वास्तविक उद्देश्य, शहर में मुसलमानों की संख्या को कम करना है क्योंकि वैश्याओं में 90 प्रतिशत वेश्याएँ मुसलमान हैं।

प्रेमचंद जी की दृष्टि केवल इस्लामपरस्त मुसलमानों तक ही नहीं गई है, उन्होंने इसमें कुछ ऐसे मुसलमान पात्र भी चित्रित किये हैं, जो सुलझे हुए उदार विचारों के धर्म निरपेक्ष लोग हैं। तेगअली, शरीफ, हसन ऐसे ही पात्र हैं, जो वेश्याओं के प्रश्न को सांप्रदायिक दृष्टि से न लेकर मानवीय धर्म–निरपेक्ष दृष्टि से देखते हैं। उनकी दृष्टि में इस प्रश्न को राजनीतिक अथवा धार्मिक दृष्टि से लेकर इसका विरोध नहीं करना चाहिए। मुसलमान इस्लाम की जनसंख्या बढ़ाने के लिए तो वेश्याओं का मुसलमान होना स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन उनके सुधार के लिए कुछ नहीं कर सकते। उनका इस्लाम वेश्याओं को उचित मार्ग पर लाने का तो कोई प्रयत्न नहीं करता, लेकिन उनकी मज़हबी तसकीन (धार्मिक शान्ति) के लिए अवश्य चिंतित रहता है। इस्लाम के मौलाना इस्लाम के धार्मिक अवसरों पर वेश्याओं की मज़हबी तसकीन के लिए खूब सज–धजकर उनके यहाँ पहुँच जाते हैं, खूब बढ़िया खाना खाते है और इत्र में तर पान के बीड़ चबाते हुए लौट आते हैं। लगता है कि इस्लाम की ज़िम्मेदारी यहीं तक समाप्त हो जाती है।

तेग अली के माध्यम से यहाँ प्रेमचंद जी ने उस समय के हिंदुओं और मुसलमानों के पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रकाश डाला है। उस समय मुसलमानों में इस्लामिक भावना इतनी अधिक थी और हिन्दुओं के प्रति इतना अधिक द्वेष था कि आम मुसलमान हिन्दुओं के प्रति अत्याचार को मुसलमान कौम की खिदमत समझते थे और जब भी उन्हें अवसर मिलता था तो वे चूकते नहीं थे और जो मुसलमान हिन्दुओं के प्रति उदार भावना को अपनाते थे, उन्हें इस्लामपरस्त मुसलमान काफिर कहते थे। प्रेमचंद जी ने 'सेवासदन' में जिस प्रकार मुसलमानों में दो वर्ग दिखाये हैं उसी प्रकार

हिन्दू नेताओं में भी दो वर्ग दिखाये हैं। एक वर्ग वह है जो हिन्दू–परस्त है और केवल अपने लाभ को देखता है और दूसरा वर्ग वह है जो राष्ट्रवादी उदार धर्म–निरपेक्ष विचारों का है।

लेखक ने उदारवादी धर्म–निरपेक्ष हिन्दू पात्रों के रूप में रूस्तम भाई, पद्मसिंह शर्मा, कुंवर अनिरूद्ध सिंह आदि पात्रों को चित्रित किया है। रूस्तम भाई का चरित्र उन्होंने एक निर्भीक स्पष्टवादी व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। प्रेमचंद जी जानते थे कि हिन्दू, हिन्दू रहेंगे, मुसलमान, मुसलमान रहेंगे, लेकिन वे सोचते थे कि इन दोनों को राष्ट्रीय विषयों को विवादग्रस्त बनाकर राष्ट्रीयता को चोट पहुँचाने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने अपने लेखों में स्पष्ट लिखा है ''हिन्दू और मुसलमान न कभी दूध और चीनी थे, न होंगे और न होने चाहिए। दोनों की अलग–अलग सूरतें बनी रहनी चाहिए और बनी रहेंगी। जरूरत–सिर्फ इस बात की है कि उनके नेताओं में परस्पर सहिष्णुता और उत्सर्ग की भावना हो।''[5] 'सेवासदन' में वेश्याओं के प्रस्ताव को लेकर हिन्दू–मुस्लिमों में बढ़ती हुई धार्मिक द्वेष भावना से उनका मन कचोट रहा था। इसमें वेश्या समस्या को म्युनिसिपालिटी की बैठक में उठाकर उसके समाधान की बात को प्रस्तुत करने के साथ ही संकेत द्वारा लेखक यह भी दिखाना चाहते हैं, कि आज वर्तमान भारत में धर्मगत एवं संप्रदायगत वैमनस्यता इतनी बढ़ गई है कि एक के द्वारा कही गई उचित और हितकर बात भी दूसरे को बुरी लगती है और उसका विरोध करता है... ''अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी संप्रदाय एवं धर्म के लोग मिलकर समाज की वास्तविक उन्नति की बात सोचें और उस पर अमल करें। सभी धर्म एक–दूसरे के प्रति वैर–भाव मिटाकर सहिष्णु बनें। इस सहिष्णुता की भावना उन्हें थियोसोफिकल सोसायटी में दिखाई पड़ती है और झट से उसे अपना लेते हैं।''[6]

'सेवासदन' में पण्डित–महात्माओं के रसिक मिजाज़ का सजीव चित्रण उस समय होता है जब रामनवमी के अवसर पर भोली नाम की वेश्या गाने जाती है। इस अवसर पर गीत और नृत्य का आनंद उठाने वाली मण्डली को सुमन धर्मात्मा मानती है। लेकिन उसका खण्डन करते हुए गजाधर उसे समझाता है, ''तुमने उन लागों के बड़े–बड़े तिलक–छापे देखकर ही उन्हें धर्मात्मा समझ लिया? आजकल धर्म तो धूर्तों का अड्डा बना हुआ है। इस निर्मल सागर में एक से एक मगरमच्छ पड़े हुए हैं। भोले–भाले भक्तों को निगल जाना उनका काम है। लम्बी–लम्बी जटाएँ, लम्बे–लम्बे तिलक–छाप और लम्बी–लम्बी दाढ़ियाँ देखकर लोग धोखे में आ जाते हैं, पर वह सबके सब पाखण्डी, धर्म के उज्ज्वल नाम को कलंकित करने वाले, धर्म के नाम पर टका कमाने वाले, भोग विलास करने वाले पापी हैं।''[7]

प्रेमचंद के लेखन में जो एक ताकत तथा उनके समय के समाज और उसकी समस्याओं की प्रामाणिक छवि देख पड़ती है तथा जिस हद तक उनका लेखन हमें अत्यंत आत्मीय तथा विश्वसनीय लगता है उसका एक बहुत बड़ा कारण लेखक की सेक्यूलयर जहनियत है। ''हम बल देकर इस बात को कहना चाहेंगे कि सांप्रदायिकता की समस्या को उसके समूचे आयामों के साथ सोच और विचार का विषय बनाने के लिए और उसके माध्यम से कुछ अहम नतीजों तक पहुँचने के लिए हमें प्रेमचंद और उनके लेखन के जैसा कोई दूसरा मॉडल नहीं मिलेगा।''[8]

इस उपन्यास में मुख्यतः वेश्याओं की समस्या हैं, और हाशिम–भाई जैसे कट्टर मुसलमान द्वारा इस समस्या का हल तथा प्रतिक्रिया यहाँ चित्रित हुई हैं। 'तेगअली' जैसे पात्रों के माध्यम से लेखक ने उस समय के हिंदुओं और मुसलमानों के पारस्परिक संबंधों पर प्रकाश डाला है। प्रेमचंद इस उपन्यास में यह विचार प्रस्तुत करते हैं, कि वेश्यावृत्ति समाज का कलंक है, कोढ़ है इसलिए उसका अंत होना चाहिए। विधवाश्रम या सेवाश्रम इस समस्या का हल नहीं हो सकता। विधाता की ओर से वे वेश्याएँ बनकर नहीं आती,लेकिन हमारा निष्ठुर समाज ही उन्हें वेश्या बनने को मजबूर करता है।

निष्कर्ष – हिन्दू–मुसलमान के बीच फूट डालकर, आपस में लड़ाकर, फायदा उठाने का अंग्रेजों का षड़यंत्र प्रेमचंद खूब जानते थे, और जनता को इस सच्चाई की तह तक ले जाने के लिए इन्होंने आजीवन प्रयत्न किया और कुछ हद तक सफल भी हुए। धार्मिक संकीर्णता जब तक हैं, तब तक पूरे मानव समाज का उत्थान असंभव हैं।इस तथ्य

को प्रेमचंद ने जाना और इस सामाजिक दैत्य के चंगुल से भारतीयों को बचाने का अथक परिश्रम साहित्य सर्जन द्वारा प्रारंभ किया।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. हिंदी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा – रामदरश मिश्र – पृष्ठ संख्या–29 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, 1968
2. कलम का सिपाही मुंशी प्रेमचंद –अमृतराय– पृष्ठ संख्या–153,हसं प्रकाशन,इलाहबाद,1962
3. वहीं – पृष्ठ संख्या–171
4. सेवासदन – मुंशी प्रेमचंद – पृष्ठ संख्या–120डायमण्ड पाकेट बुक्स, दरियागंज, नई दिल्ली, 1918
5. विविध प्रसंग – भाग–2 – पृष्ठ संख्या–355– संकलन कर्ता–अमृतराय, 1962
6. प्रेमचंद के जीवन–दर्शन के विधायक तत्व – डॉ0 कृष्णचन्द पाण्डेय – पृष्ठ संख्या–191–जीत मलहोत्रा प्रकाश, इलाहाबाद,1970
7. डायमण्ड पाकेट बुक्स,दरियागंज,नई दिल्ली, 1918
8. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994

****